- रुबाइयाँ
- गज़ल

–फ़िराक गोरखपुरी

कवि परिचय

जीवन परिचय—फ़िराक गोरखपुरी उर्दू-फ़ारसी के जाने-माने शायर थे। इनका जन्म 28 अगस्त, सन 1896 को गोरखपुर में हुआ था। इनका मूल नाम रघुपति सहाय 'फ़िराक' था। इन्होंने रामकृष्ण की कहानियों से अपनी शिक्षा की शुरुआत की। बाद में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी में शिक्षा ग्रहण की। 1917 ई० में ये डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित हुए, परंतु स्वतंत्रता आंदोलन के कारण इन्होंने 1918 ई० में इस पद को त्याग दिया। आंदोलन में हिस्सा लेने के कारण सन 1920 में इन्हें डेढ़ वर्ष की जेल हुई। ये इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी विषय के अध्यापक भी रहे। इन्हें 'गुले-नग्मा' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड मिला। सन 1938 में इनका देहावसान हो गया।

रचनाएँ—गोरखपुरी जी ने शायरी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए। इनकी महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं–

गुले-नग्मा, बज़्में ज़िंदगी, रंगे-शायरी, उर्दू गज़लगोई।

काव्यगत विशेषताएँ—उर्दू शायरी साहित्य का बड़ा हिस्सा रुमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है जिसमें लोकजीवन और प्रकृति के पक्ष बहुत कम उभरकर सामने आए हैं। नज़ीर अकबराबादी, इल्ताफ़ हुसैन हाली जैसे कुछ शायरों ने इस परंपरा को तोड़ा है, फ़िराक गोरखपुरी भी उनमें से एक हैं।

फ़िराक ने परंपरागत भावबोध और शब्द-भंडार का उपयोग करते हुए उसे नयी भाषा और नए विषयों से जोड़ा। उनके यहाँ सामाजिक दुख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर शायरी में ढला है। इंसान के हाथों इंसान पर जो गुज़रती है, उसकी तल्ख सच्चाई और आने वाले कल के प्रति एक उम्मीद, दोनों को भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर उन्होंने अपनी शायरी का अनूठा महल खड़ा किया।

भाषा-शैली—उर्दू शायरी अपने लाक्षणिक प्रयोगों और चुस्त मुहावरेदारी के लिए प्रसिद्ध है। शेर लिखे नहीं, कहे जाते हैं। यह एक तरह का संवाद होता है। मीर, गालिब की तरह फ़िराक ने भी इस शैली को साधकर आम-आदमी या साधारण-जन से अपनी बात कही है।

प्रतिपाद्य एवं सार

(क) रुबाइयाँ

प्रतिपाद्य–फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना 'गुले-नग्मा' से उद्धृत हैं। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसकी पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है। इन्हें पढ़ने से सूरदास के वात्सल्य वर्णन की याद आती है।

सार–इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है। वह उसे साफ़ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है। बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है।

दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते हैं। चीनी-मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमक आ जाती है। आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चाँद उतर आया है।

रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वहीं संबंध भाई का बहन से है।

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) रुबाइयाँ

1. *आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी*
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी। (पृष्ठ 94)

[*CBSE* (*Delhi*), *2008*; (*Foreign*), *2010*]

शब्दार्थ—***चाँद का टुकड़ा***—बहुत प्यारा। ***गोद-भरी***—गोद में भरकर, आँचल में लेकर। ***लोका देती है***—उछाल देती है।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**रुबाइयाँ**' से उद्धृत है। इसके रचयिता उर्दू-फ़ारसी के प्रमुख शायर **फ़िराक गोरखपुरी** हैं। इस रुबाई में कवि ने माँ के स्नेह का वर्णन किया है।

व्याख्या—शायर कहता है कि एक माँ चाँद के टुकड़े अर्थात अपने बेटे को अपने घर के आँगन में लिए खड़ी है। वहीं अपने चाँद के टुकड़े को अपने हाथों पर झुलाने लगती है। बीच-बीच में वह उसे हवा में उछाल भी देती है। इस प्रक्रिया से बच्चा प्रसन्न हो उठता है तथा बच्चे की खिलखिलाहट-भरी हँसी गूँजने लगती है।

विशेष—(*i*) माँ द्वारा बच्चे को झुलाना, बच्चे का हँसना आदि स्वाभाविक क्रियाएँ हैं। स्वभावोक्ति अलंकार है।

(*ii*) वात्सल्य रस है।

(*iii*) दृश्य बिंब है–
'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी', 'गोद-भरी', 'हाथों पे झुलाती', 'हवा में जो लोका देती है'।

(*iv*) अंतिम पंक्ति में श्रव्य बिंब है।

(*v*) 'चाँद के टुकड़े' मुहावरे का सुंदर प्रयोग है।

(*vi*) 'रह-रह' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(*vii*) 'लोका देना' देशज भाषा का प्रयोग है।

(*viii*) उर्दू-हिंदी मिश्रित शब्दावली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *कवि ने 'चाँद का टुकड़ा' किसे कहा है और क्यों?*

(ख) *बच्चे की हँसी का कारण क्या है? उसके गूँजने से क्या तात्पर्य है?*

(ग) *काव्यांश के भाव को अपने शब्दों में चित्रित कीजिए।*

उत्तर **(क)** कवि ने चाँद का टुकड़ा माँ की गोद में खेल रहे बच्चे को कहा है क्योंकि वह चाँद के समान ही सुंदर है।

(ख) बच्चे की हँसी का कारण है–माँ द्वारा बच्चे को हवा में लोका दिया जाना या उसे खुश करने के लिए हवा में उछालना। उसके गूँजने का तात्पर्य है–इससे बच्चा खुश होकर हँसता है और उसकी हँसी गूँजने लगती है।

(ग) काव्यांश का भाव यह है कि माँ अपने चाँद जैसी सुंदर संतान को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे अपने हाथों पर झुलाती हुई हवा में उछाल देती है। इससे बच्चा खिलखिलाकर हँसने लगता है।

2. *नहला के छलके-छलके निर्मल जल से*
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े। (पृष्ठ–58)

शब्दार्थ—***छलके***—हिलते-डुलते। ***निर्मल***—स्वच्छ, साफ़। ***गेसुओं***—बालों। ***घुटनियों***—घुटनों। ***पिन्हाती***—पहनाती।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**रुबाइयाँ**' से उद्‌धृत है। इसके रचयिता उर्दू-फ़ारसी के प्रमुख शायर **फ़िराक गोरखपुरी** हैं। इसमें, माँ द्‌वारा बच्चे के नहाने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—शायर कहता है कि माँ अपने बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है। उसके उलझे हुए बालों से पानी छलक रहा है। माँ बच्चे के बालों में कंघी करती है। जब वह उसे अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है तो बच्चा अत्यंत स्नेह से माँ के मुख को निहारता रहता है।

विशेष—(*i*) माँ के स्नेह का स्वाभाविक वर्णन है। अत: स्वभावोक्ति अलंकार है।

(*ii*) वात्सल्य रस की सहज अभिव्यक्ति है।

(*iii*) 'छलके-छलके' में पुनरुक्ति प्रकाश एवं 'कंघी करके' में अनुप्रास अलंकार है।

(*iv*) 'जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े' में लोकभाषा का प्रयोग है।

(*v*) उर्दू-हिंदी भाषा का मिश्रित रूप है।

(*vi*) दृश्य बिंब है।

(*vii*) रुबाई छंद है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *माँ बच्चे को किस प्रकार नहलाती है?*

(ख) *माँ बच्चे की कंघी कैसे करती है?*

(ग) *बच्चा कब अपनी माँ को प्यार से देखता है?*

उत्तर (क) माँ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है। पानी के छलकने से बच्चा प्रसन्न होता है।

(ख) माँ बच्चे के उलझे हुए बालों में कंघी करती है।

(ग) जब माँ बच्चे को अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है तब वह अपनी माँ को देखता है।

3. *दीवाली की शाम घर पुते और सजे*
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिए। (पृष्ठ–58)

शब्दार्थ—***शाम***—संध्या। ***पुते***—साफ़-सुथरे, रँगे। ***लावे***—लाए। ***रूपवती***—सुंदरी। ***मुखड़े***—मुख। ***इक***—एक। ***दमक***—चमक। ***घरौंदे***—मिट्टी के घर। ***दिए***—दीपक।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**रुबाइयाँ**' से उद्धृत है। इसके रचयिता उर्दू-फ़ारसी के प्रमुख शायर **फ़िराक गोरखपुरी** हैं। इसमें दीवाली के त्योहार का वर्णन किया गया है।

व्याख्या—शायर कहता है कि आज दीवाली की शाम है। इस अवसर पर घर रंग-रोगन से पुता हुआ तथा सजा हुआ है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने हुए खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। माँ के सुंदर मुँह पर हलकी चमक-सी आ जाती है। वह बच्चे के छोटे-से घर में दिया जलाती है।

विशेष—(*i*) आम व्यक्ति के घर में दीवाली के अवसर पर हुई रौनक का स्वाभाविक चित्रण है।
(*ii*) माँ की ममता का सुंदर चित्रण है।
(*iii*) दृश्य बिंब है–
'रंग-रोगन से पुते और सजे घर', 'चीनी के खिलौने जगमगाते', 'रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक', 'घरौंदे में जलाती है दिए'।
(*iv*) 'रूपवती मुखड़ा' व 'नर्म दमक' विलक्षण प्रयोग है।
(*v*) रुबाई छंद तथा भाषा का मिश्रित रूप है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *दीवाली पर लोग क्या करते हैं?*
(ख) *माँ के चेहरे पर कैसा भाव आता है?*
(ग) *माँ दिया कहाँ जलाती है तथा क्यों?*

उत्तर (क) दीवाली के अवसर पर लोग घरों में रंग-रोगन करते हैं तथा उसे सजाते हैं।
(ख) जब माँ बच्चे के घर में दिया जलाती है तो उसके सुंदर मुख पर दमक होती है।
(ग) माँ बच्चे के छोटे से घर में दिया जलाती है क्योंकि इस कार्य से बच्चा बहुत प्रसन्न होता है।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. *आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी*
हाथों में झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े।

[CBSE (Delhi), 2013]

प्रश्न **(क)** *'चाँद का टुकड़ा' कौन है? इस बिंब के प्रयोगगत भावों में क्या विशेषता है?*

(ख) *बच्चे को लेकर माँ के किन क्रियाकलापों का चित्रण किया गया है? उनसे उसके किस भाव की अभिव्यक्ति हो रही है?*

(ग) *'किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को' में अभिव्यक्त बच्चे के चेष्टाजन्य सौंदर्य की विशेषता को स्पष्ट कीजिए।*

(घ) *माँ और बच्चे के स्नेह-संबंधों पर टिप्पणी कीजिए।*

उत्तर (क) 'चाँद का टुकड़ा' माँ की गोद में खेल रहा वह बच्चा है, जिसे माँ हाथों में लिए हवा में झुला रही है। इस प्रयोग से बच्चे को प्रसन्न करने के लिए उसे हवा में झुलाती माँ का बिंब साकार हो उठा है।

(ख) बच्चे को लेकर माँ आँगन में खड़ी है। वह हँसाने के लिए बच्चे को हवा में झुला रही है, लोका दे रही है। इन क्रियाओं से प्रेम और वात्सल्य के साथ ही उसकी ममता की अभिव्यक्ति हो रही है।

(ग) 'किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को' अंश में बालसुलभ और चेष्टाजन्य क्रियाएँ साकार हो उठी हैं। माँ बच्चे को नहला-धुलाकर जब अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है तो बच्चा अपनत्व भाव से माँ के चेहरे को देखता है। ऐसे में बच्चे का सौंदर्य और भी निखर जाता है।

(घ) माँ और बच्चे का संबंध वात्सल्य और ममता से भरपूर होता है। बच्चा अपनी सारी ज़रूरतों के लिए जहाँ माँ पर निर्भर होता है, वहीं माँ को बच्चा सर्वाधिक प्रिय होता है। वह उसकी ज़रूरतों का ध्यान रखती है तथा प्यार और ममता से पोषित करके उसे बड़ा करती है।

2. *आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है*
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है

दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है।

प्रश्न **(क)** *काव्यांश की भाषा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।*

(ख) *यह काव्यांश किस छंद में लिखा गया है? विशेषता बताइए।*

(ग) *'देख आईने में चाँद उतर आया है' कथन के सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।*

उत्तर (क) काव्यांश की भाषा उर्दू-हिंदी भाषा है। इसमें सरलता, सुबोधता है। बाल-मनोविज्ञान का सजीव चित्रण है।

(ख) यह काव्यांश रुबाई छंद में लिखा गया है। इसमें चार पंक्तियाँ होती हैं। इसकी पहली व चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।

(ग) इस कथन में माँ की सूझ-बूझ का वर्णन है। वह बच्चे की ज़िद को आईने में चाँद को दिखाकर पूरा करती है। यहाँ ग्रामीण संस्कृति प्रत्यक्ष रूप से साकार हो उठती है।

1. *शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है ?*

उत्तर शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि रक्षाबंधन सावन के महीने में आता है। इस समय आकाश में घटाएँ छाई होती हैं तथा उनमें बिजली भी चमकती है। राखी के लच्छे बिजली कौधने की तरह चमकते हैं। बिजली की चमक सत्य को उद्घाटित करती है तथा राखी के लच्छे रिश्तों की पवित्रता को व्यक्त करते हैं। घटा का जो संबंध बिजली से है, वही संबंध भाई का बहन से है।

2. *खुद का परदा खोलने से क्या आशय है ?*

उत्तर 'खुद का परदा' खोलने का आशय है–अपनी कमियों या दोषों को स्वयं ही प्रकट करना। यदि कोई व्यक्ति दूसरे की निंदा करता है तो वह अपनी स्वयं की ही कमज़ोरी व्यक्त कर रहा होता है। कवि की बुराई करने वाला अपनी बुराइयों से भी परदा उठाता है।

3. ***किस्मत हमको रो लेवे है हम किस्मत को रो ले हैं**–इस पंक्ति में शायर की किस्मत के साथ तना-तनी का रिश्ता अभिव्यक्त हुआ है। चर्चा कीजिए।*

उत्तर कवि अपने भाग्य से कभी संतुष्ट नहीं रहा। किस्मत ने कभी उसका साथ नहीं दिया। वह अत्यधिक निराश हो जाता है। वह अपनी बदकिस्मती के लिए खीझता रहता है। दूसरे, कवि कर्महीन लोगों पर व्यंग्य करता है। कर्महीन लोग असफलता मिलने पर भाग्य को दोष देते हैं और किस्मत उनकी कर्महीनता को दोष देती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *'रुबाइयाँ' के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य-बिंब को अपने शब्दों में समझाइए।*

उत्तर कवि दीपावली के त्योहार के बारे में बताते हुए कहता है कि इस अवसर पर घर में पुताई की जाती है तथा उसे सजाया जाता है। घरों में मिठाई के नाम पर चीनी के बने खिलौने आते हैं। रोशनी भी की जाती है। बच्चे के छोटे-से घर में दिए के जलाने से माँ के मुखड़े की चमक में नयी आभा आ जाती है।

रक्षाबंधन का त्योहार सावन के महीने में आता है। इस त्योहार पर आकाश में हल्की घटाएँ छाई होती हैं। राखी के लच्छे भी बिजली की तरह चमकते हुए प्रतीत होते हैं।

2. *फ़िराक की गज़ल में प्रकृति को किस तरह चित्रित किया गया है ?*

उत्तर फ़िराक की गज़ल के प्रथम दो शेर प्रकृति वर्णन को ही समर्पित हैं। प्रथम शेर में कलियों के खिलने की प्रक्रिया का भावपूर्ण वर्णन है। कवि इस शेर को नव रसों से आरंभ करता है। हर कोमल गाँठ के खुल जाने में कलियों का खिलना और दूसरा प्रतीकात्मक अर्थ भी है कि सब बंधनों से मुक्त हो जाना, संबंध सुधर जाना। इसके बाद कवि कलियों के खिलने से रंगों और सुगंध के फैल जाने की बात करता है। पाठक के समक्ष एक बिंब उभरता है। वह सौंदर्य और सुगंध दोनों को महसूस करता है।

3. *'फ़िराक' की रुबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।* [*CBSE* (*Outside*), *2009*]

उत्तर 'फ़िराक' की रुबाइयों में घरेलू जीवन का चित्रण हुआ है। इन्होंने कई बिंब उकेरे हैं। एक बिंब में माँ छोटे बच्चे को अपने हाथ में झुला रही है। बच्चे की तुलना चाँद से की गई है। दूसरे बिंब में माँ बच्चे को नहलाकर कपड़े पहनाती है तथा बच्चा उसे प्यार से देखता है। तीसरे बिंब में बच्चे द्वारा चाँद लेने की ज़िद करना तथा माँ द्वारा दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर बच्चे को बहलाने की कोशिश को बताया गया है। ये सभी बिंब लगभग हर घरेलू जीवन में पाए जाते हैं।

स्वयं करें

1. त्योहार हमारे चेहरों पर खुशी का भाव प्रकट कर देते हैं। 'रुबाइयाँ' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
2. बाल-सुलभ हठ और माँ द्वारा बच्चे को बहलाने के लिए किए गए प्रयासों को 'रुबाइयाँ' के आधार पर लिखिए।
3. भाई के हाथों में बँधी राखी की तुलना किससे की गई है और क्यों?
4. कवि अपनी किस्मत पर और किस्मत कवि पर क्यों रोती है? दोनों के एक-दूसरे पर रोने को आप कितना तर्कसंगत मानते हैं?
5. शायर फ़िराक ने दुनिया के जिस दस्तूर का ज़िक्र किया है, उसे आप कितना उचित मानते हैं? शायर इससे बचने के लिए क्या करता है?
6. निम्नलिखित रुबाइयों के अंशों एवं शेर को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(अ) आँगन में ठुनक रहा है, ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है

(क) *काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ख) *काव्यांश की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।*
(ग) *माँ बच्चे के हठ को किस प्रकार पूरा कर रही है?*

(ब) तेरे गम का पासे-अदब है कुछ दुनिया का खयाल भी है
सबसे छिपा के दर्द के मारे चुपके-चुपके रो ले हैं

(क) *शायर अपने प्रिय के दुख का लिहाज़ किस तरह करता है?*
(ख) *भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ग) *काव्यांश के भाषिक सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।*